Shahnai Nawaz

Ustad Bismillah Khan

शहनाई नवाज़

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

Shahnai Nawaz

Ustad Bismillah Khan

The names of **Bismillah Khan**, his instrument Shahnai, and the sacred city of Kashi (now known as Varanasi) will for ever remain inextricably entwined in our collective memories. Though Bismillah was born into a family of Shahnai-players in Dumraun (a small princely state in Bihar) on 21st March 1916, he was, at the age of three brought along with his elder brother Shamsuddin to their maternal uncle's home in Benares, --a home which had produced generations of Shahnai-players; it was a home always filled with the resonant and melodious tones of the Shahnais, and their Duggad accompanists. Bismillah's uncle ("*maamu*") Ali Bux played on the Shahnai in the Vishnu-temple of Varanasi during the rituals of Pooja, morning, noon, evening, and night. And then, Ali Bux would take his young disciple Bismillah to the Balaji temple where, in a secluded room, the boy used to receive his training and spend hours and hours absorbed in his meditative "*Sadhana*" on the Shahnai. He was given most nourishing food and made to lead a highly disciplined life with fixed hours for physical exercises and rest, because the Shahnai is an instrument that demands excellent health and perfect breath-control. During his long years of meditative *riyaz* (practice) on the Shahnai, Bismillah had many mystical visions and he received the bounty of blessings from these "supernatural visions". Living in his ancestral home in Benia Bagh in Benares since his boyhood, Bismillah availed of the numerous opportunities he got to hear many of the great female singers who lived in Benares, and he learnt much from their songs (singers like Rasoolan Bai, Vidhyadhari, Rajeshwari, Siddheswari, Mushtari, Badi Moti Bais). Although Bismillah accompanied his "Maamu" in Music Conferences from the age of 14, he feels that his recital to launch AIR Lucknow Station of AIR on 2nd April, 1938 was the date from which his ascendance into worldwide fame began. Since then, Bismillah's Shahnai has inaugurated many auspicious occasions like the launching of Lucknow Doordarshan, Lucknow Mahotsavas, Festivals of Uttar Dakshin Cultural Organisation and so on. Most

people are not aware of the fact that Bismillah is a fine vocalist and that he has been inspired by many great maestros like Ustads Abdul Karim Khan, Faiyaz Khan, Bade Ghulam Ali Khan, Amir Khan, Mushtaq Hussain, Pdt Omkarnath Thakur and also by the many leading women singers and instrumental virtuosi of recent decades. All these have added to the colour of his musical style, and that is why his shahnai has the poignancy and eloquence of many of these styles. We get the flavours of many *"gharanas"* in his Shahnai. He does not have a very wide repertory of ragas but he has polished and perfected each of the ragas and "bandishes" that he plays-including *Khayals, Thumris, Dadras, Kajaris, Chaitis, Poorbi dhuns* and even devotional songs. Although he has travelled and performed all over the world, and many countries outside India have offered him all possible luxuries and tempting emoluments to lure him away, Bismillah has instantly refused them all because he says he can never live away from his beloved home in Benares. For Lucknow too he has a very soft corner because it was his debut in Lucknow AIR on the inaugural evening that helped him soar into fame.

Even at this age, Bismillah has frequent bookings, and he earns lakhs of rupees but then he spends all of it to provide for a large joint-family of about 100 dependants!

All possible Awards have been showered on Bismillah such as Sangeet Natak Akademy Award (in 1956), Padma Sri (1961), Padmabhushan (in 1968) PadmaVibhushan (in 1980), Doctor of Letters from B.H.U "Desikottama from Viswabharati University and so on and on...But there is a yogic detachment in his attitude to all these coveted honours and glories. Though a devout Muslim, he is really above castes and creeds because Music is his life and his real Religion. Bismillah's Shahnai has given lasting popularity to films like *"Goonj Uthi Shahnai" "Jhanak jhanak Payal Baaje"* etc. He has trained up many deserving disciples including his son and son-in-law, but one of his favourite disciples is Jagdish whose daughter *Bagesri* (a disciple of Khan Saheb), is perhaps the *only female artiste on the Shahnai.*

The mesmerising effect of Bismillah's Shahnai even on a foreign music connoisseur has been best described by *Peggy Holroyde* (a disciple of Pdt Ravi Shankar):- "The magic of the haunting and evocative tones of his Shahnai --transformed that first encounter into a moment of real transition. The remembrance of that first indelible occasion when Bismillah bowed with a gracious Lucknow *adaab* to the august gathering and drew the elongated *shadja* note from his shahnai after a delicate hint (grace-note) of the previous *nishad* note, was to stay beside me and influence me through all the years--in this heart-warming land (India) which I now regard as a permanent home in my mind--Indeed the concentration of emotion in the music took my heart by storm..."

Recently Bismillah was described as "a saintly musician" who is not excited by the numerous Awards and Honours that are still being showered on him. His jugalbandis with various musicians like Vilayat Khan (Sitar), Jog or Rajam (Violin), Girijadevi or Savitadevi (Vocal) have been applauded and recorded, but he is at his best as a soloist with his own team of accompanists.

Susheela Misra

शहनाई नवाज़

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

लोक-मानस में **बिस्मिल्ला खाँ** का नाम उनके वाद्य शहनाई और उनकी पावन साधना-स्थली काशी के नाम के साथ सदैव अटूट रूप से जुड़ा रहेगा। यों तो बिस्मिल्ला का जन्म बिहार प्रदेश की डुमराँव नाम की छोटी सी रियासत के शहनाई वादकों के परिवार में २१ मार्च सन् १९१६ को हुआ था, किन्तु तीन वर्ष की छोटी सी उम्र में ही अपने बड़े भाई शमसुद्दीन के साथ उन्हें बनारस अपने मामू के घर लाया गया जहाँ से विगत वर्षों में शहनाई वादकों की अनेक पीढ़ियाँ गुज़र चुकी थीं। मामू का घर शहनाई के मधुर सुरों और डुग्गड़ की थापों से सदैव मुखर रहता था। बिस्मिल्ला के मामू अली बख्श वाराणसी के विष्णु मंदिर में प्रातः, दोपहर, सायं और रात्री में पूजन बेला पर नित्य-नैमित्तिक रूप से शहनाई बजाया करते थे। उसके बाद अली बख्श अपने नन्हें शार्गिद बिस्मिल्ला को बालाजी के मंदिर ले जाते, जहाँ एकान्त कमरें में बालक बिस्मिल्ला संगीत की शिक्षा ग्रहण करते तथा घंटों ध्यानावस्थित रह कर शहनाई साधना करते। उन्हें खाने में अत्यधिक पौष्टिक भोजन मिलता था तथा साथ ही अति अनुशासित जीवन बिताना पड़ता था। नित्य की दिनचर्या में शारीरिक व्यायाम के साथ आराम का समय भी निर्धारित था क्योंकि शहनाई वादन के लिए सुदृढ़ स्वास्थ्य के साथ साथ श्वास नियंत्रण की भी नितांत आवश्यकता होती है ध्यानावस्था में शहनाई के अनवरत अभ्यास एवं उसकी वर्षों लम्बी साधना के फलस्वरूप बिस्मिल्ला को अनेकों बार रहस्यात्मक अनुभूतियाँ हुईं। इन अलौकिक अनुभूतियों और दिव्य दर्शनों ने बिस्मिल्ला पर कृपा की भरपूर वर्षा की, और उन्हें बहुत फ़ैज हासिल हुआ, और आर्शीवाद के वरदान मुक्तरूप से प्राप्त हुए।

बनारस में बेनियाबाग के अपने पुरखों के मकान पर बचपन से रहते हुए बिस्मिल्ला को नगर की महान गायिकाओं को सुनने के अनेंको अवसर मिले। बिस्मिल्ला ने इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाया। उन्होंने रसूलन बाई, विद्याधरी, राजेश्वरी, सिद्धेश्वरी, मुश्तरी बाई, बड़ी मोती बाई जैसी अनेक प्रसिद्ध गायिकाओं से बहुत कुछ सीखा।

यों तो बिस्मिल्ला १४ वर्ष की अवस्था से ही अपने मामू के साथ संगीत सभाओं में बजाने लगे थे किन्तु वे मानते हैं कि २ अप्रैल १९३८ को ऑल इन्डिया रेडियो लखनऊ के उद्घाटन पर उनके द्वारा प्रस्तुत शहनाई वादन के साथ ही उनके संगीत-जीवन का शुभारंभ हुआ और शनैःशनै वे ख्याति के सोपान पर चढ़ने लगे। उस समय से अब तक बिस्मिल्ला की शहनाई ने अनेक शुभ अवसरों और संस्थाओं का उद्घाटन किया है: जैसे लखनऊ

दूरदर्शन, लखनऊ महोत्सव तथा उत्तर दक्षिण सांस्कृतिक संगठन की महोत्सवों आदि के उद्घाटन।

बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते कि उस्ताद बिस्मिल्ला एक उम्दा गायक भी हैं। गायन क्षेत्र में जिन विख्यात गायकों ने उन्हें प्रेरित किया उनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैः उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, फैयाज़ खाँ, बड़े गुलाम अली, अमीर खाँ, मुश्ताक हुसैन, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर। इसके अतिरिक्त विगत दशकों की कुछ गायिकाओं, और वाद्यवादकों की शैलियों का समन्वित प्रभाव बिस्मिल्ला पर पड़ा। इससे उनकी संगीत शैली और भी अधिक रंगीन बन गई तथा उनकी शहनाई और अधिक मार्मिक, हृदय स्पर्शी औार भाव-व्यंजक हो गई है। उनकी शहनाई में विभिन्न घरानों का ज़ायका मिलता है।

बिस्मिल्ला की झोली में रागों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, किन्तु जो भी राग या बन्दिश वे बजाते हैं उसे वे पूर्णता की सीमा तक परिमार्जित व परिष्कृत करते हैं, चाहे वह ख्याल हो या ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, पूरबी धुनें या आराधना संगीत।

बिस्मिल्ला ने विश्व भ्रमण कर अनेक देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। बहुत से देशों ने उन्हें हर संभव सुख व आराम एवं आकर्षक वेतन का प्रलोभन दिया परन्तु बिस्मिल्ला ने प्रत्येक प्रलोभन को ठुकरा दिया। उनका कहना है कि बनारस में अपने प्रिय घर से वे कभी दूर नहीं जा सकते। लखनऊ के लिए उनके हृदय में कोमल स्थान है क्योंकि लखनऊ रेडियो स्टेशन की उद्घाटन संध्या पर सर्वप्रथम उनका शहनाई वादन वहीं से प्रसारित हुआ था और उसी तिथि से उनके संगीत जीवन का शुभारंभ हुआ और धीरे धीरे वे ख्याति की ऊँचाइयों को छूने लगे। वे अपनी उम्र के ७९ उन्यासी से अधिक वसन्त देख चुके हैं और आज भी अक्सर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और लाखों कमाते हैं- पर वे सबकी सब रक़म खर्च कर डालते है अपने संयुक्त परिवार के पोषण पर जिसमें आश्रितों की संख्या लगभग १०० है!

बिस्मिल्ला खॉ को हर तरह के पुरस्कार व उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं। सन् १९५६ में उन्हें संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार प्रदान किया गया था। सन् १९६१ में वे 'पद्म श्री', सन् १९६८ में 'पद्म भूषण', सन् १९८० में 'पद्म विभूषण' की उपाधियों से विभूषित हुए। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डाक्टर ऑफ लेटरस' तथा विश्वभारती ने 'देशिकोत्तम' उपाधि प्रदान की! परन्तु इन सभी स्पृहणीय सम्मान तथा गौरव प्राप्ति के प्रति उनके हृदय में सदा एक योगी-सुलभ तटस्था रही है। व एक धर्म परायण मुसलमान हैं तथा जाति व सम्प्रदाय की सोच से सदैव दूर रहते हैं।

संगीत ही उनका जीवन हैं और संगीत ही उनका मज़हब। उनकी बहुआयामी प्रतिभा ने 'झनक झनक पायल बाजे' तथा 'गूँज उठी शहनाई' फिल्मों को स्थायी लोक प्रियता

प्रदान की है। उन्होंने अनेकों होनहार शिष्यों को प्रशिक्षित किया है जिनमें उनके पुत्र तथा दामाद भी हैं। उनके सबसे प्रिय शिष्यों में जगदीश हैं जिनकी *सुपुत्री बागेश्री कदाचित शहनाई की एक मात्र साधिका हैं।*

बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई का सम्मोहक प्रभाव विदेश के संगीत मर्मज्ञों पर भी पड़ा है। इस प्रभाव का बड़ा ही सटीक वर्णन पंडित रविशंकर की शिष्या (Peggy Holroyde) पेगी हॉलरॉयड ने इस प्रकार किया है: ''मन पर छा जाने वाले तथा सोई यादों को जगा देने वाले उनकी शहनाई के जादुई सुरों ने उस प्रथम मिलन को वास्तविक परिवर्तन की घड़ी में रूपान्तरित कर दिया। जब बिस्मिल्ला ने बड़े सौम्य लखनवी अंदाज़ व अदब से सिर झुका कर भव्य श्रोता समुदाय का अभिवादन किया तथा प्रथम प्रस्तुत मन्द्र-सप्तक में कोमल निषाद से षडज तक मीठी मींड की; तो उस प्रथम अवसर की अमिट स्मृति मेरे मन में रच-बस गई और उन तमाम वर्षों में वह स्मृति बराबर प्रभावित करती रही जब तक मैं इस स्नेही देश (भारत) में रहीं, जिसे अब मैं मन मे अपना स्थायी निवास मानने लगी हूँ। वास्तव में इस संगीत में घनीभूत संवेग ने मुझे एकाएक झकझोर दिया था।''

बिस्मिल्ला खाँ को हाल में ही 'संत-संगीतज्ञ' का नाम दिया गया है। वे उन तमाम पुरस्कारों तथा सम्मानों से कतई उत्तेजित या प्रभावित नहीं होते जो अब भी उन पर बरसाये जा रहे हैं। विलायत खाँ (सितार वादक), जोग तथा राजम (वायलिन वादक), गिरिजा देवी या सविता देवी (गायिका) आदि विभिन्न कलाकारों के साथ प्रस्तुत उनकी जुगलबन्दियों की भूरि भूरि प्रशंसा हुई है तथा उनके (L.P.) 'रिकार्ड' तैयार किये गये है- परन्तु अपने संगतकारों की टोली के साथ एकल कलाकार के रूप में अपना वादन प्रस्तुत करने में उन्हें आत्यांतिक सुख की अनुभूति होती है। और इस एकल वादन में उनकी शहनाई का रंग ही अनोखा होता है।

सुशीला मिश्रा

छाया चित्र- **राकेश सिन्हा**
हिन्दी अनुवाद - **ओम प्रकाश दीक्षित**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमतीनगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् शिवम आर्ट्स 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।